सुविचार- अगर आप दूसरों के बारे में भी सोचते हैं तो आप सच्चे इंसान हैं.

कहानी

खरगोश की बुद्धिमानी

घने जंगल में एक छोटा सा खरगोश रहता था. वह स्वभाव से बहुत चंचल और बुद्धिमान था. उसे सबसे ज्यादा गाजर खाना पसंद था. जंगल के एक कोने में एक बड़ा बगीचा था, जहां हर मौसम में ताजी और मीठी गाजरें उगती थीं. खरगोश कई बार दूर से उस बगीचे को देखता और वहां जाने का मन बनाता, लेकिन एक बड़ी समस्या थी. उस इलाके में एक शक्तिशाली शेर का आतंक था.

शेर स्वयं को जंगल का राजा मानता था और किसी भी जानवर को अपनी अनुमति के बिना वहां आने नहीं देता था. डर के कारण सभी जानवर उससे दूर रहते थे. खरगोश ने कई दिनों तक स्थिति का निरीक्षण किया. वह समझ गया कि शेर बहुत ताकतवर है, लेकिन उसके अंदर एक कमजोरी भी है अहंकार और लालच. एक दिन खरगोश साहस जुटाकर शेर के पास पहुंचा. शेर ने उसे देखकर गरजते हुए पूछा कि वह वहां क्यों आया है. खरगोश ने विनम्रता से कहा, महाराज, आप जंगल के सबसे शक्तिशाली जीव हैं. लेकिन यदि आप चाहें तो केवल राजा ही नहीं, बल्कि सच्चे सम्राट भी बन सकते हैं. शेर को अपनी प्रशंसा सुनना अच्छा लगा. उसने उत्सुकता से पूछा कि ऐसा कैसे संभव है. तब खरगोश ने उसे बगीचे के बारे में बताया और कहा कि वहां इतनी गाजरें हैं कि पूरा जंगल उसका गुणगान करेगा.

यह सुनकर शेर के मन में लालच जाग उठा. वह तुरंत बगीचे की ओर दौड़ पड़ा. बगीचे में पहुंचकर शेर ने बिना सोचे-समझे गाजरों को रौंदना शुरू कर दिया. उसने जरूरत से ज्यादा नुकसान पहुंचाया. कुछ ही देर में सुंदर बगीचा बर्बाद हो गया. जब शेर का गुस्सा और लालच शांत हुआ, तब उसे एहसास हुआ कि उसने अपने ही हाथों एक मूल्यवान संसाधन नष्ट कर दिया है.

खरगोश धीरे-धीरे उसके पास आया और बोला, महाराज, यदि आपने धैर्य और समझदारी से काम लिया होता तो यह बगीचा लंबे समय तक सबके काम आता. लेकिन लालच ने आपको सोचने का अवसर ही नहीं दिया.शेर को अपनी गलती का एहसास हुआ. उसने स्वीकार किया कि केवल ताकत से कोई महान नहीं बनता. सही निर्णय लेने के लिए बुद्धि और संयम भी जरूरी हैं.

उसने खरगोश को धन्यवाद दिया और भविष्य में लालच से दूर रहने का वचन दिया. उस दिन के बाद जंगल के सभी जानवरों ने राहत की सांस ली. शेर का व्यवहार भी बदल गया और वह पहले की तुलना में अधिक समझदार बन गया. वहीं खरगोश की चतुराई की चर्चा पूरे जंगल में होने लगी.

सीख

कठिन परिस्थितियों में घबराने के बजाय बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए. साथ ही लालच हमेशा नुकसान पहुंचाता है, जबकि संयम और समझदारी हमें सही रास्ता दिखाते हैं. लालच से बचना चाहिए क्योंकि यह हमेशा नुकसान का कारण बनता है. समझदारी से ही जीवन के कठिन हालातों से बाहर निकल सकते हैं.

अंतर ढूंढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूंढकर निकालें.

उत्तर :- 1. मछली का रंग बदला है, 2. खजाने का बॉक्स, 3. केकड़ा का होना, 4. सीप का अंतर, 5. सिक्कों की स्थिति, 6. समुद्री पौधों में बदलाव

भूल भुलैया

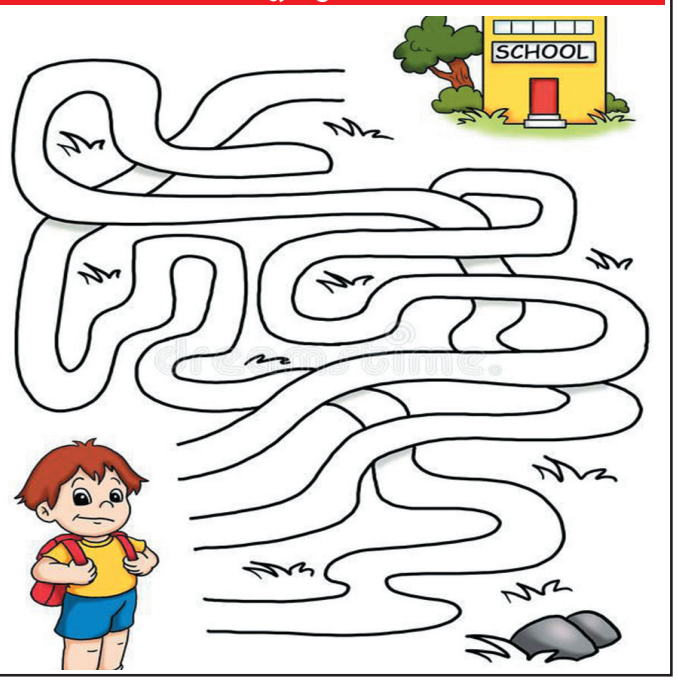

बूझो तो जानें

- छोटा सा डिब्बा,
बड़ी पहचान,
हर सवाल का देता ज्ञान,
बटन दबाओ, खुल जाए संसार,
बताओ क्या है यह उपहार
उत्तर - कंप्यूटर

- मैं बिना पंख उड़ता हूँ,
बिना मुँह के बोलता हूँ,
जहाँ जाऊँ वहाँ खबर ले जाऊँ,
बताओ मैं क्या कहलाता हूँ
उत्तर - हवा

- सफेद मेरा रंग है प्यारा,
ठंडक देना काम हमारा,
पानी में मिल जाऊँ तुरंत,
बताओ कौन हूँ मैं सुनो जरा
उत्तर - बर्फ

- चार भाई हैं मेरे,
एक साथ रहते हैं,
हर घर में काम आते,
बताओ हम क्या कहते हैं
उत्तर - मेज

- मैं उड़ता हूँ बिना पंख के,
रोता हूँ बिना आँख के,
जहाँ जाऊँ वहाँ ठंडक लाऊँ,
बताओ मेरा नाम क्या है
उत्तर - बादल

- एक पैर है, फिर भी चलता,
बिना मुँह के सब कुछ कहता,
समय बताना है इसका काम,
बताओ क्या है इसका नाम
उत्तर - घड़ी

- ना मैं खाता, ना मैं पीता,
फिर भी हर चीज़ को सीता,
कपड़ों को मैं जोड़ता हूँ,
बताओ मैं कौन होता हूँ
उत्तर - सुई

जानकारी

रबर पेड़ के रोचक रहस्य

क्या आप जानते हैं कि रबर, जिससे टायर, रबर बैंड, दस्ताने और कई उपयोगी वस्तुएं बनाई जाती हैं, वह एक विशेष पेड़ से प्राप्त होता है? इस पेड़ को रबर प्लांट या रबर ट्री कहा जाता है.

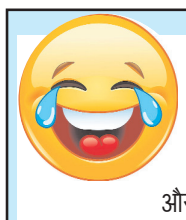

रबर का पेड़ मुख्य रूप से उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है. इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके तने से निकलने वाला सफेद, दूध जैसा तरल पदार्थ लेटेक्स कहलाता है. इसी लेटेक्स से प्राकृतिक रबर तैयार किया जाता है. जब पेड़ की छाल पर सावधानी से हल्का कट लगाया जाता है, तो लेटेक्स बाहर निकलता है और उसे एकत्र कर विभिन्न प्रक्रियाओं के बाद रबर में बदल दिया जाता है. रबर के पेड़ की ऊंचाई 20 से 30 मीटर तक हो सकती है. यह पेड़ कई वर्षों तक लेटेक्स देता रहता है, इसलिए इसे आर्थिक रूप से बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है. दुनिया के कई देशों में रबर की खेती किसानों की आय का प्रमुख स्रोत है. दिलचस्प बात यह है कि रबर का पेड़ पर्यावरण के लिए भी लाभदायक होता है. यह वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित कर ऑक्सीजन छोड़ता है, जिससे वायु को स्वच्छ रखने में मदद मिलती है.

इसके अलावा, बड़े रबर बागान मिट्टी के कटाव को कम करने में भी सहायक होते हैं.आज प्राकृतिक रबर का उपयोग ऑटोमोबाइल उद्योग, चिकित्सा उपकरणों, खेल सामग्री और अनेक घरेलू वस्तुओं में किया जाता है. एक साधारण दिखने वाला रबर का पेड़ आधुनिक जीवन की कई जरूरी चीजों का आधार है. यह तथ्य हमें बताता है कि प्रकृति ने पेड़-पौधों में कितने अद्भुत संसाधन छिपाए हैं, जो मानव जीवन को आसान और सुविधाजनक बनाते हैं.

दुनिया का सबसे छोटा कीट फैरीफ्लाई

दुनिया का सबसे छोटा ज्ञात कीट इतना सूक्ष्म होता है कि उसे नंगी आंखों से देख पाना बेहद मुश्किल है. इस अद्भुत कीट का नाम फेयरीफ्लाई समूह की एक सूक्ष्म ततैया किकीकी हुना. इसकी लंबाई केवल लगभग 0.15 से 0.20 मिलीमीटर होती है. तुलना करें तो यह एक साधारण सुई की नोक से भी छोटा होता है.

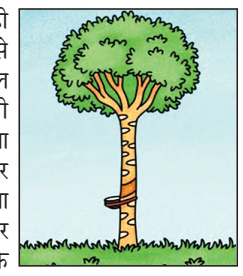

हालांकि इसके नाम में 'फ्लाई' यानी मक्खी शब्द आता है, लेकिन यह वास्तव में एक बेहद छोटी परजीवी ततैया है. यह अपने अंडे अन्य छोटे कीटों के अंडों के भीतर देती है. इसी कारण इसे प्रकृति के सूक्ष्म संतुलन को बनाए रखने वाले जीवों में गिना जाता है. यह कीट विशेष रुचि का विषय है क्योंकि इतने छोटे आकार में भी इसके शरीर में आंखें, पंख, पैर और अन्य आवश्यक अंग मौजूद होते हैं. इसके पंखों के किनारों पर बाल जैसे रेशे होते हैं, जो इसे हवा में उड़ने में मदद करते हैं.

दुनिया के सबसे छोटे कीटों का अध्ययन यह समझने में मदद करता है कि प्रकृति कितनी अद्भुत और विविधतापूर्ण है. जहां एक ओर हाथी जैसे विशाल जीव पृथ्वी पर मौजूद हैं, वहीं दूसरी ओर इतने सूक्ष्म कीट भी हैं जिन्हें देखने के लिए विशेष उपकरणों की आवश्यकता पड़ती है. यह तथ्य हमें सिखाता है कि किसी जीव का महत्व उसके आकार से नहीं आंका जा सकता. प्रकृति में हर जीव, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

कविता

तितली आई

रंग-बिरंगी तितली आई,
फूलों पर वह मंडराई

लाल, पीले, नीले पंख,
देख सभी के खिल
उठे अंक

इधर-उधर वह उड़ती जाए,
सबके मन को खूब लुभाए

प्यारी तितली, प्यारी बात,
खुशियों से भर दे
दिन-रात

हंसी-ठिठोली

- टीचर : अगर तुम्हारे पास 5 आम हैं और मैं 2 ले लूं, तो कितने बचेंगे?
स्टूडेंट : सर, 5 ही रहेंगे
टीचर : कैसे
स्टूडेंट : क्योंकि मैं आपको दूंगा ही नहीं

- टीचर : बताओ, सबसे तेज़ क्या चलता है
स्टूडेंट : सर, मोबाइल का इंटरनेट
टीचर : कैसे
स्टूडेंट : क्योंकि खत्म होने में 1 सेकंड भी नहीं लगता

- पापा : बेटा, पढ़ाई कैसी चल रही है
बेटा : पापा, पढ़ाई तो चल रही है बस दिमाग बैठा हुआ है

- टीचर : पिंकी, अगर तुम देर से आती हो तो क्या सीख मिलती है
पिंकी : सर, अगली बार और देर से आना चाहिए, ताकि डांट कम मिले

- टीचर : ऐसा कौन सा फल है जो मीठा नहीं होता
स्टूडेंट : सर, 'फल' नहीं 'फेल' होता है... और वो बहुत कड़वा होता है

- टीचर - जीरो की खोज आर्यभट्ट ने की थी.
कोरोना की छुट्टी खुलने के बाद
टीचर -जीरो की खोज किसने की ?
बच्चा -मेडम जीरो की खोज आलिया भट्ट ने.

प्रेरक प्रसंग

तिलक की सोच बनी आजादी की ताकत

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अनेक महान नेताओं ने योगदान दिया, लेकिन बाल गंगाधर तिलक का नाम उन लोगों में शामिल है जिन्होंने देशवासियों के मन में आजादी की अलख जगाई. उन्हें लोकमान्य की उपाधि जनता ने दी थी, क्योंकि वे लोगों के दिलों में बसते थे. बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई 1856 को महाराष्ट्र के रत्नागिरी में हुआ था. बचपन से ही वे तेज बुद्धि और सत्यवादी स्वभाव के थे. एक बार स्कूल में शिक्षक ने उन्हें उस गलती की सजा देनी चाही जो उन्होंने की ही नहीं थी. तिलक ने बिना डरे अपनी बात रखी और झूठा आरोप स्वीकार करने से इनकार कर दिया. यही साहस आगे चलकर उनके व्यक्तित्व की पहचान बना.

तिलक का मानना था कि शिक्षा केवल नौकरी पाने का साधन नहीं, बल्कि समाज को जागरूक बनाने का माध्यम है. उन्होंने युवाओं को राष्ट्रभक्ति का पाठ पढ़ाया और लोगों में आत्मविश्वास जगाया. उस समय अंग्रेजी शासन बहुत शक्तिशाली था और अधिकांश लोग उसके खिलाफ बोलने से डरते थे. लेकिन तिलक ने निडर होकर अन्याय का विरोध किया. उन्होंने अपने समाचार पत्रों 'केसरी' और 'मराठा' के माध्यम से लोगों तक स्वतंत्रता का संदेश पहुंचाया. उनके लेख इतने प्रभावशाली होते थे कि हजारों लोग उनसे प्रेरित होकर देशसेवा के लिए आगे आते थे.

तिलक ने प्रसिद्ध नारा दिया, स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा. यह नारा पूरे देश में जोश और उत्साह का प्रतीक बन गया. अंग्रेज सरकार ने उनकी लोकप्रियता से घबराकर उन्हें कई बार जेल भेजा. लेकिन कठिन परिस्थितियों ने उनके हौसले को कमजोर नहीं किया. जेल में भी उन्होंने अध्ययन और लेखन जारी रखा. उन्होंने हर चुनौती को अवसर में बदलने का प्रयास किया.

तिलक की कहानी हमें सिखाती है कि सच्चा नेतृत्व साहस, आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प से बनता है. यदि हमारे इरादे मजबूत हों, तो बड़ी से बड़ी बाधा भी हमें रोक नहीं सकती. तिलक का जीवन आज भी युवाओं को अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की प्रेरणा देता है. उनकी विरासत हमें याद दिलाती है कि परिवर्तन की शुरुआत एक साहसी विचार से होती है.

बिंदु मिलाओ

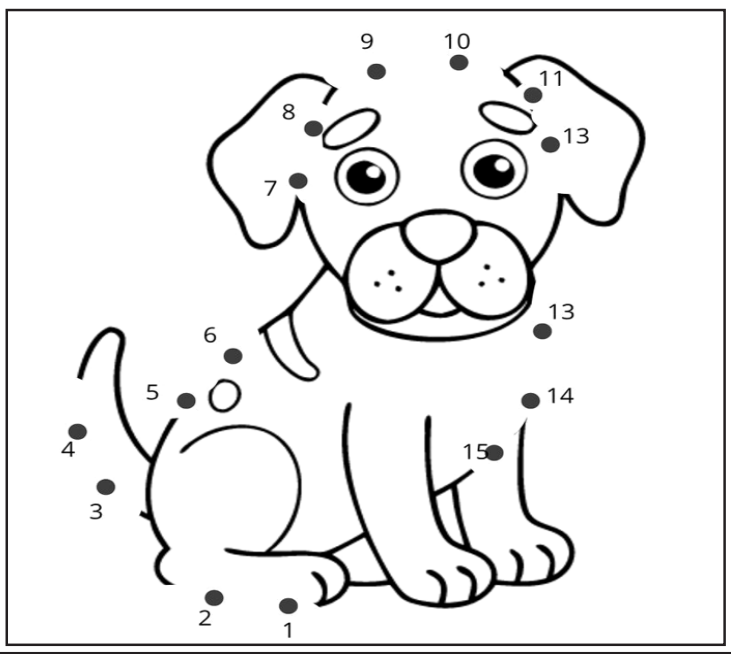

रंग भरो

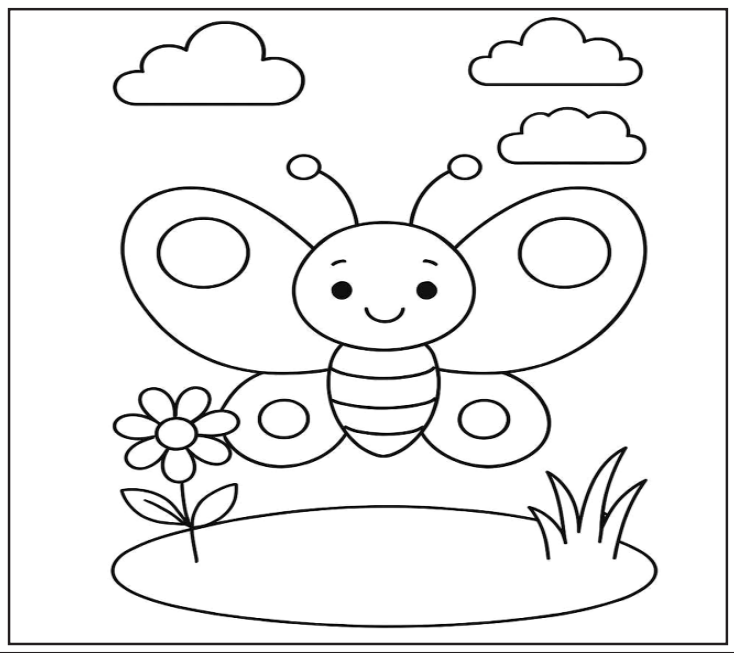

बच्चों अपनी कहानियां, कविताएं, पेंटिंग्स , लेख, रचनाएं आदि bhopalnav@gmail.com **पर मेल करें.**